ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14 Vol.-I, No.-1, PP-88-89, YEAR 2013

सांकेतिकता की कसौटी पर पदमावत की परख

❑ डॉ0 अमृता पाठक

सांकेतिकता की कसौटी पर पदमावत को परखने पर प्रतीत होता है कि जायसी ने अपने महाकाव्य में सांकेतिक भाब्दावली का सामिप्राय प्रयोग किया है। इन सांकेतिक भाब्दों द्वारा काव्य का सौन्दर्य द्विगुणित हो उठा है। भावों को तीव्रता पूर्वक व्यक्त करने के लिये कवि ने संकेतों का सारगर्भित प्रयोग किया है। यह निःसंदेह प्रातिभ कवि जायसी की प्रत्युत्पन्न मति होने का परिणाम है। प्रेमकाव्य पदमावत की रचना लोकभाशा अवधी में हुयी है। लोकभाशा के अनुरूप इसकी सरलता और कोमलता पाठकों को आनन्दमग्न कर देती है। प्रेम और श्रृंगार का यह ह्रदयग्राही वर्णन किसी को भी रसमग्न करने की क्षमता रखता है। सांकेतिकता के निष्कर्श पर पदमावत को परखने के प्रयास के पूर्व चरम संक्षिप्त के साथ पदमावत और जायसी की किंचित चर्चा यहाँ अपेक्षित है।

पदमावत महाकाव्य में ऐतिहासिकता और कल्पना के माध्यम से हिन्दू घरों में प्रचलित रत्नसेन और पदमावती की लोक कथा का सरस भाशा में वर्णन हुआ है। मुस्लिम होकर भी जायसी ने हिन्दू संस्कृति और देवी–देवता का मनोहारी वर्णन किया है, जो उनकी सह्रदयता का यह परिचायक है। मसनवी भौली के अनुरूप पदमावत के प्रारम्भ में मुहम्मद साहब की स्तुति, भोर ाह की स्तुति, ई ा–वन्दना एवं गुरू की स्तुति की गयी है। किसी भी धर्म के प्रति निश्पक्ष रहते हुए समभाव जायसी की श्रेश्ठता एवं मानवीय दृश्टिकोंण का ही परिचायक है। सूफी साधना के अनुकूल नायिका ई वर का प्रतीक है, जबकि नायक एकनिश्ठ साधक का। स्त्री रूपी ई वर की प्राप्ति के लिये साधक सन्नद्ध होता है एवं साधना–पथ की कठिनाइयों से तनिक भी विचलित न होकर विजयपथ पर सदा अग्रसर रहता है।

महाकवि जायसी अद्वैतवाद और एके वरवाद से प्रभावित थे। तद्नुरूप संसार की न वरता का मर्मस्प र्ी वर्णन किया है; यथा–

'छार उठाइ लीन्हि एक मूँठी।
दीन्हि उड़ाइ पिरिथमी झूठी।
जौ लगि ऊपर छार न परई।
तब लगि नाहिं जो तिस्ना मरई।'

पदमावती के रूप सौन्दर्य पर मोहित अलाउद्दीन को नायिका के सती होने के बाद संसार की न वरता का भान होता है और सौन्दर्य रूपी माया उसे व्यर्थ प्रतीत होती है। इसी प्रकार एके वरवाद के समर्थन में उन्होंने पदमावती रूपी ई वर के सौन्दर्य को जगत के कण–कण में व्याप्त दिखाया है; यथा–'बिगसे कुमुद देखि ससि रेखा। मै तेहि रूप जहाँ जो देखा।

पाए रूप रूप जस चहे।
ससि मुख सब दरपन होइ रहे।'

इस प्रकार सांकेतिक भाब्दों के माध्यम से कवि ने अपने भावों को आकार देने का सद्प्रयास गम्भीरता एवं हार्दिकता से किया है। पदमावती की यौवनाभिव्यक्ति को तीव्रता देने के लिये कवि ने घोड़े की तीव्र गति एवं हाथी के मतवालेपन का मनोहारी वर्णन किया है; यथा–

जोबन तुरै हाथ गहि लीजै। जहाँ जा तहँ जाइ न दीजै।
जोबन जो रे मतँग गज अहै। गहु गिआन जिमि आँकुस गहै।

अर्थात– अतः यहाँ पदमावती के यौवनावस्था के अनुरूप सार्थक सांकेतिक भाब्दावली जायसी की विलक्षण प्रतिभा का द्योतक है। सांकेतिकता के द्वारा काव्य की अर्थच्छटा अद्वितीय हो गयी है। अर्थ की यह छटा पाठक के अन्तःकरण को आपाततः आप्लावित कर देती है। पदमावत की एक अनोखी वि ाश्टता यह भी है कि कवि ने प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अलौकिक वर्णन किया है। इस प्रकार की वि ोशोक्ति द्वारा पदमावत की अर्थच्छटा द्विगुणित हो उठी है; यथा–

उन्ह बानन्ह उस को जो न मारा।
बेधि रहा सगरो संसारा।
ऐ रानी मन देखु बिचारी।
एहि नैहर रहना दिन चारी।

यहाँ 'सांसारिकता' का बोध कराने के लिये

सहायक अध्यापिका, श्री गाँधी इण्टर कालेज, ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0) भारत

सांकेतिक भाब्द 'नैहर' की भावाभिव्यक्ति द्वारा आध्यात्मिक अर्थ की प्रतीति कराने का सफल प्रयास किया गया है। वस्तुतः जायसी निर्गुण भक्ति धारा के कवि हैं। अतः पदमावत में 'प्रस्तुत प्रेम' के माध्यम से 'अप्रस्तुत भक्ति' की विवेचना संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से प्रवाहमान है। कुछ विद्वान पदमावत को प्रतीक काव्य मानते हैं क्योंकि पदमावत के अंत में सभी पात्रों को किसी न किसी प्रतीक में बॉधा गया है; यथा–

तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि पदमिनि चीन्हा।
गुरू सुआ जेहि पंथ देखावा। बिन गुरू जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।
राघव दूत सोइ सैतानू। माया अलाउदीं सुलतानू।
प्रेम कथा एहि भाँति विचारहुँ। बूझि लेहु जो बूझै पारहु।

उपर्युक्त उद्धरण में सभी पात्रों को उनकी वि ोशताओं के अनुरूप ही सांकेतिक जामा पहनाया गया है। चित्तौड़गढ़ के भव्य किन्तु बाहरी सौन्दर्य पर रत्नसेन आकर्शित है। मन की चंचलता के अनुरूप कभी तो वह बाहरी आकर्शण पर मुग्ध होता है और कभी पदमावती के अलौकिक सौन्दर्य पर मुग्ध भ्रमर की भाँति गुँजार करता है। 'मन रूपी रत्नसेन' चित्तौड़गढ़ रूपी वाह्य सौन्दर्य का त्याग करके पदमावती के अद्वितीय सौन्दर्य को प्राप्त करने के लिये उत्सुक होता है। मन की दृढ़ता के द्वारा परमसत्ता रूपी पदमावती को प्राप्त भी कर लेता है। इस प्रकार मन के सदृ य ही रत्नसेन अनेक बार विचलित होता है और अन्ततः दृढ़ता द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति करता है।

इसी प्रकार 'पदमावती' और 'सिंहलद्वीप' का सम्बन्ध स्थापित करने के लिये कवि ने 'ह्रदय' और 'बुद्धि' का रूपक बाँधा है। पदमावती का निवास स्थान सिंहलद्वीप कोमल भावनाओं से परिपूर्ण ह्रदय के समान है एवं बुद्धि स्वरूपा पदमावती को ह्रदयगत भावों से विलग नहीं होने देता है। निर्मल बुद्धि रूपी पदमावती का सौन्दर्य ही जगत के कण–कण में व्याप्त है। उसमें बुद्धि के प्राधान्य के कारण ही रत्नसेन सारे अवगुणों का त्याग कर उसे प्राप्त करता है। रत्नसेन और पदमावती के मिलन द्वारा 'मन' और 'बुद्धि' का ही मिलन होता है। हीरामन तोता, ज्ञान के अनुरूप गुरू की गरिमा से मण्डित है एवं अपने मार्गद ान में रत्नसेन और पदमावती का मिलन कराता है। नागमती को दुनिया –धंधा कहकर जायसी ने उसे साधारण स्त्री के रूप में ही चित्रित किया है। यद्यपि उसका प्रेम और विरह इस महाकाव्य का प्राण तत्व है, फिर भी वह साधारण स्त्री की भाँति विवेक ाून्य होकर अपनी विरह–व्यथा जड़–चेतन सब तक पहुँचाती है। इसीलिये कवि ने उसे दुनिया–धंधे में लिप्त साधारण स्त्री माना है। राघव चेतन अपने विद्वता के मद में चूर अपनी गरिमा को ही भूल बैठा है। वह जिस राजा के आश्रय में सम्मान पाता है उसी के सर्वना ा का कारण बनता है। अतः भौतानी प्रवृतियों के कारण ही ' ौतान' की पदवी पाता है। पदमावती के सौन्दर्य जाल में फंसा अलाउद्दीन माया के व ीभूत हो भयंकर नरसंहार करता है और अंत में पदमावती की राख ही नसीब होती है। पदमावती के जिस रूप–सौन्दर्य पर वह मोहित होता है उसी सौन्दर्य की क्षणिकता से सांसारिक न वरता का भान होता है। अतः अलाउद्दीन को 'माया' की प्रतीकात्मकता देकर उसके रसलोलुप व्यक्तित्व की झाँकी कवि ने प्रस्तुत की है। नागमती के विरह अति ायता देने के लिये कवि ने सांकेतिक भाब्दों का उत्कृश्ट प्रयोग किया है; यथा–

'दाधे राहु केतु गा दाधा। सूरज जरा चाँद जरि आधा।
औ सब नखत तराई जरहीं। टुटहिं लूक धरहिं महँ परहीं।'

इसी प्रकार सिंहलगढ़ के वर्णन में जायसी ने प्रस्तुत अप्रस्तुत अर्थ की व्यंजना पर बल दिया है यथा– फिरहिं पाँच कोतवाल सुभौरी। काँपै पाँव चलत ओहि पौरी।

नौ पौरी पर दसवँ दुआरा। तेही पर बाज राज घरिआरा।

यहाँ सांकेतिक भाब्दों के द्वारा कवि ने आध्यात्मिकता की प्रतीति करायी है। सुशुम्ना नाड़ी एवं कुण्डलिनी जाग्रत करने का वर्णन है। नौ द्वार नाक, कान, मुँह आदि है एवं पाँच कोतवाल की भाँति काम, क्रोध भारीर में विचरण करते हैं। अतः इन विकारों पर विजय प्राप्त कर साधना की चरमावस्था ही कवि का ध्येय है। रत्नसेन अपने विकारों पर विजय पाकर साधना की उच्चावस्था को प्राप्त करता है।

इस प्रकार प्रेम और भक्ति के कवि जायसी ने भावानुरूप ही संकेत–विधान का निर्वाह किया है, जिससे पदमावत का सौन्दर्य द्विगुणित हो उठा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भावों और परिस्थिति के अनुरूप सांकेतिक भाब्द अनायास ही निःसृत होते गये हैं। अतः संकेतों का साभिप्राय प्रयोग जायसी जैसे बहुज्ञ कवि के लिये ही सम्भव है।

*****